कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

प्रयोजन मूलक हिन्दी की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं प्रयोगात्मक शैली पर प्रकाश डालें।

प्रयोजन मूलक हिन्दी राजभाषा की हिन्दी है, जब हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और सरकारी कामकाज हिन्दी में करने का प्रचलन किया जाने लगा, तब उनके व्यवहारिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होना स्वाभाविक था। क्योंकि हिन्दी अभी तक रूप में नहीं आ सकी थी, जिस रूप में उसे होना चाहिए अतः हिन्दी को राजभाषा योग्य बनाने के लिए जो उपक्रम हुआ उसके मूल स्वरूप प्रयोजन मूलक हिन्दी का आगमन हुआ। प्रयोजनमूलक हिन्दी, हिन्दी का कोई दूसरा रूप नहीं है। बल्कि इसके अन्तर्गत वैसे शब्दों और वाक्यों को स्थान मिला है जो राज-काज संचार-विज्ञान सूचना अधिसूचना विधि आदि की भाषा के रूप में उपयोग किये जाते हैं।

प्रयोजन मूलक हिन्दी में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है, जो एकार्थक होते हैं। जिसके अर्थ भ्रान्ति मूलक नहीं होते। इस हिन्दी का उपयोग व्यवहारिक जीवन में संभव नहीं क्योंकि व्यावहारिक जीवन में ऐसे सीमित दायरे नहीं है। जैसा कि

Scanned with CamScanner

प्रशासनिक जीवन अथवा व्यवसायिक जीवन में होते है। व्यवहारिक जीवन में भावनाओं की प्रधानता होती है इसमें विभिन्न आवेग भी आते है, इन आवेगों का प्रकटीकरण प्रयोजन मूलक हिन्दी से नहीं हो सकता। व्यवहारिक हिन्दी को सुबोध सुगम शब्दों की अपेक्षा होती है। जबकि प्रयोजनमूलक हिन्दी को भावनाओं से कोई मतलब नहीं होता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के वाक्य विन्यास भी अलग होते है। इन वाक्यों में आवेगजन्य अनुभूतियों का सर्वथा अभाव रहता है। क्योंकि इनसे घरेलू जीवन से मतलब नहीं। इसका प्रयोजन प्रशासन वाणिज्य, मंत्र आदि से होता है ऐसी दशा में प्रयोजनमूलक हिन्दी को व्यवहारिक हिन्दी कहना उचित नहीं है अगर दुसरी दृष्टि से देखा जाय तो प्रयोजनमूलक हिन्दी को व्यवहारिक हिन्दी कहना सही मालूम पड़ता है। आज का जीवन अत्यन्त जटिल हो गया है। एक-एक व्यक्ति दूर-संचार एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया का उपयोग कर रहा है। शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा मिले जिसे सरकारि कार्यालय से तालुक नहीं हो आज का युग विज्ञान का युग है। सामाजिक और परिवारिक जिवन-शैली बदल गई है अतः आज का युग विज्ञान का युग है।

© Marvel

Scanned with CamScanner